68वीं - 70 वीं
BPSC
हिंदी माध्यम

Examdhara®
Publication

BPSC PREVIOUS YEAR

निबंध

E-BOOK
READ

विगत वर्षों में बीपीएससी परीक्षा में पूछे गए निबंध

71वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा के लिए उपयोगी

विषय-सूची

विगत वर्षों में बीपीएससी परीक्षा में पूछे गए निबंध

खंड-1: अमूर्त निबंध

क्रमांक	निबंध	पृष्ठ
1	समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की महत्ता (70वीं BPSC)	B-2
2	देश का विकास और सूचना प्रौद्योगिकी (70वीं BPSC)	B-3
3	पर्यावरण असन्तुलन सृष्टि का विनाशक है (70वीं BPSC)	B-4
4	भूमि संरक्षण और जैविक खेती (70वीं BPSC)	B-6
5	विज्ञान और प्रौद्योगिकी ब्रह्मांड के रहस्यों को जानने में सहायक हैं (69वीं BPSC)	B-7
6	कृषि व्यवस्था में सुधार कर देश के ग्रामीण अर्थतंत्र को सशक्त बना सकते हैं (69वीं BPSC)	B-8
7	काले धन की अर्थव्यवस्था अपराध और भ्रष्टाचार का प्रमुख कारण है (69वीं BPSC)	B-10
8	आधुनिक संचार क्रांति ने मानव के संचार के साधनों और टेक्नोलॉजी के प्रति जागरूकता में क्रांतिकारी रूप से वृद्धि की है (69वीं BPSC)	B-11
9	जंगल अपने पेड़ स्वयं तैयार करता है। यह लोगों के जंगल में आकार बीज फेंकने का इंतजार नहीं करता है। (68वीं BPSC)	B-12
10	साहित्य ज्ञान का केवल एक स्रोत ही नहीं है, साथ ही वह नैतिक और सामाजिक क्रिया का भी एक रूप है। (68वीं BPSC)	B-13
11	अपने अनिवार्य कर्तव्य का पालन करें क्योंकि कर्म निश्चय ही निष्क्रियता से उत्तम है। (68वीं BPSC)	B-15
12	उत्कृष्ट कला हमारे अनुभव को प्रकाशित करती है या सत्य को उद्घाटित करती है। (68वीं BPSC)	B-16

खंड-2: मूर्त निबंध

क्रमांक	निबंध	पृष्ठ
13	राजनीतिक इच्छाशक्ति और देश की सुरक्षा (70वीं BPSC)	B-18
14	भ्रष्टाचार का अन्त और देश का उत्थान (70वीं BPSC)	B-19
15	शिथिल कानून और व्यवस्था नारी सशक्तीकरण की बाधा (70वीं BPSC)	B-20
16	विश्व-कल्याण आध्यात्मिक चेतना के बिना असम्भव है (70वीं BPSC)	B-22
17	महिला सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति राजनैतिक सशक्तिकरण के परिप्रेक्ष्य में (69वीं BPSC)	B-23
18	आध्यात्मिक उन्नति तथा शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए योग की आवश्यकता और महत्त्व (69वीं BPSC)	B-24
19	नई शिक्षा नीति, 2023 के फायदे और नुकसान (69वीं BPSC)	B-25
20	भारतीय कृषि पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव तथा बचाव के उपाय (69वीं BPSC)	B-26
21	हम इतिहास-निर्माता नहीं हैं, बल्कि हम इतिहास द्वारा निर्मित हैं (68वीं BPSC)	B-27
22	इंटरनेट ने हमारे संसार को विश्वगाँव में बदल दिया है (68वीं BPSC)	B-29
23	विचार जीवन का आधार है (68वीं BPSC)	B-30
24	कोविड के बाद बदलाव माँगती शिक्षा (68वीं BPSC)	B-31

खंड-3: स्थानीय लोकोक्ति पर आधारित निबंध

क्रमांक	निबंध	पृष्ठ
25	बनले के साथी सब केहू ह अउरी बिगड़ले के केहु नाहीं (70वीं BPSC)	B-33
26	जिअते माछी नाहीं घोंटाई (70वीं BPSC)	B-34
27	बापक नाम साग पात आ बेटाक नाम परोर (70वीं BPSC)	B-35
28	जइसन बोअबड ओइसने कटबड (70वीं BPSC)	B-36
29	बिन समाज के बोली हो सकेला का, बिन बोली (भाषा) समाज हो सकेला का (69वीं BPSC)	B-38
30	धोबियक कुकुर ने घर के ने घाट के (69वीं BPSC)	B-39
31	आगु नाथ ने पालू पगहा, बिना छान के कूदे गधा (69वीं BPSC)	B-41
32	अनेर धुनेर के राम रखवार (69वीं BPSC)	B-42
33	धर्म के बिना विज्ञान नाङ्गर (लंगड़ा) छै, विज्ञान के बिना धर्म आन्हर (अँधा) छै (68वीं BPSC)	B-43
34	पानी में मछरिया, नौ-नौ कुटिया बखरा (68वीं BPSC)	B-44
35	अगिला खेती आगे-आगे, पछिला खेती भागे-जागे (68वीं BPSC)	B-45
36	मूस मोटइहें, लोढ़ा होइहें, ना हाथी, ना घोड़ा होइहें (68वीं BPSC)	B-47

खंड-1: अमूर्त निबंध

1. समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की महत्ता (70वीं BPSC)

आज के वैश्विक परिदृश्य में भारत एक उभरती हुई महाशक्ति के रूप में स्थापित हो रहा है। जिस प्रकार एक समय विश्व में औद्योगिक क्रांति ने नए शक्ति केंद्र बनाए थे, उसी प्रकार 21वीं सदी में भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्थाएँ वैश्विक संतुलन को नए सिरे से परिभाषित कर रही हैं। भारत की बढ़ती जनसंख्या, सशक्त लोकतंत्र, आर्थिक प्रगति, तकनीकी नवाचार और सांस्कृतिक धरोहर ने उसे विश्व समुदाय में एक अनिवार्य भूमिका प्रदान की है।

भारत की भू-राजनीतिक स्थिति उसकी महत्ता को और अधिक बढ़ा देती है। एशिया के हृदय में स्थित भारत, दक्षिण एशिया के देशों के लिए न केवल एक आर्थिक साझेदार है, बल्कि रणनीतिक दृष्टि से भी एक स्थिर शक्ति के रूप में देखा जाता है। हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की बढ़ती उपस्थिति, 'इंडो-पैसिफिक' रणनीति में उसकी सक्रिय भागीदारी और क्षेत्रीय सहयोग संगठन जैसे सार्क, बिम्सटेक तथा शंघाई सहयोग संगठन में उसकी भूमिका उसे एक निर्णायक खिलाड़ी बनाती है।

आर्थिक दृष्टि से देखें तो भारत विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) और विश्व बैंक जैसी संस्थाओं ने भी भारत की विकास दर को सराहा है। भारत का स्टार्टअप ईकोसिस्टम, डिजिटल इंडिया अभियान, मेक इन इंडिया पहल तथा वैश्विक निवेशकों के लिए आकर्षक वातावरण उसे विश्व अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख इंजन बना रहे हैं। आज गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, अमेजन जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के शीर्ष पदों पर भारतीय मूल के अधिकारी कार्यरत हैं, जो भारत की वैश्विक क्षमता का परिचायक है।

तकनीकी क्षेत्र में भारत की भूमिका भी उल्लेखनीय है। सूचना प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष अनुसंधान, फार्मास्यूटिकल्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में भारत ने अद्वितीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। इसरो द्वारा किए गए चंद्रयान और मंगलयान अभियानों ने विश्वभर में भारत की वैज्ञानिक क्षमता का लोहा मनवाया है। कोविड-19 महामारी के दौरान भारत ने "वैक्सीन मैत्री" कार्यक्रम के तहत अनेक देशों को वैक्सीन उपलब्ध कराकर 'विश्व गुरु' की अपनी परंपरागत भूमिका को पुनः सशक्त किया।

सांस्कृतिक दृष्टि से भी भारत का प्रभाव व्यापक है। योग, आयुर्वेद, भारतीय खानपान, हिंदी भाषा और बॉलीवुड जैसी सॉफ्ट पावर न केवल एशिया, बल्कि यूरोप, अमेरिका और अफ्रीका तक भारतीय संस्कृति को लोकप्रिय बना रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंगीकार किया जाना भारत के सांस्कृतिक प्रभाव का जीवंत उदाहरण है। भारत की 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) की भावना आज वैश्विक मंचों पर शांति और समरसता का संदेश देती है।

राजनीतिक स्तर पर भारत की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती जा रही है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिए भारत की दावेदारी को विश्व के अनेक देशों का समर्थन प्राप्त है। भारत जी-20 जैसे वैश्विक मंचों पर भी अपनी सक्रियता बढ़ा रहा है। हाल ही में भारत ने जी-20 की अध्यक्षता संभालकर वैश्विक विकास और समावेशी वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण नीतिगत पहल की हैं। साथ ही, जलवायु परिवर्तन जैसे वैश्विक मुद्दों पर भी भारत ने "वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर" जैसे दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं।

भारत की विदेश नीति में "बहुपक्षीयता" और "स्ट्रैटेजिक ऑटोनॉमी" की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। रूस-यूक्रेन युद्ध, अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध जैसी जटिल अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों में भी भारत ने संतुलित और स्वतंत्र नीति अपनाई है। 'क्वाड' (QUAD) समूह में अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ साझेदारी हो या ब्रिक्स (BRICS) देशों के साथ आर्थिक सहयोग, भारत हर मंच पर अपनी उपस्थिति प्रभावी बना रहा है।

भारत की युवा जनसंख्या भी उसकी वैश्विक महत्ता में योगदान कर रही है। जहाँ विकसित देश वृद्धावस्था की ओर बढ़ रहे हैं, वहीं भारत में लगभग 65% जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है। यह 'जनसांख्यिकीय लाभांश' भारत को भविष्य में विश्व के लिए ज्ञान, श्रम और नवाचार का केंद्र बना सकता है। इसके साथ ही, शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास पर भारत का बढ़ता हुआ ध्यान उसकी भविष्य की वैश्विक भूमिका को और सशक्त करेगा।

हालाँकि, चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। गरीबी, असमानता, पर्यावरणीय संकट, सामाजिक संघर्ष जैसे मुद्दे भारत की आंतरिक मजबूती को प्रभावित कर सकते हैं। लेकिन इन समस्याओं के समाधान के लिए भारत द्वारा उठाए गए कदम, जैसे सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को अपनाना, नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश बढ़ाना और डिजिटल समावेशन की दिशा में कार्य करना, यह दिखाते हैं कि भारत न केवल अपनी समस्याओं को पहचानता है, बल्कि उनका समाधान भी खोज रहा है।

भारत के इस बढ़ते वैश्विक प्रभाव को प्रसिद्ध विचारक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शब्दों में समझा जा सकता है:

"भारत एक विकसित राष्ट्र बन सकता है यदि हम अपनी क्षमताओं पर विश्वास करें और उन्हें सही दिशा में प्रयुक्त करें।"

आज भारत उसी दिशा में आगे बढ़ रहा है। अपनी ऐतिहासिक विरासत और आधुनिक दृष्टिकोण के संतुलन के साथ भारत वैश्विक मंच पर न केवल अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है, बल्कि नीतियों और सिद्धांतों के माध्यम से विश्व को दिशा भी दे रहा है।

इसलिए, समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की महत्ता दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। आने वाले वर्षों में भारत न केवल एक आर्थिक या सैन्य शक्ति के रूप में, बल्कि नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक शक्ति के रूप में भी विश्व पटल पर अपनी पहचान और मजबूत करेगा।

2. देश का विकास और सूचना प्रौद्योगिकी (70वीं BPSC)

आज के युग को यदि सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology) का युग कहा जाए, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। सूचना प्रौद्योगिकी ने जिस तरह से मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है, वह अद्वितीय है। विशेषकर विकासशील देशों के लिए सूचना प्रौद्योगिकी एक वरदान के समान है, जिसने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए हैं। भारत जैसे विशाल देश में, जहाँ विविधताएँ, चुनौतियाँ और संभावनाएँ समान रूप से विद्यमान हैं, सूचना प्रौद्योगिकी ने देश के विकास को एक नई दिशा और गति प्रदान की है।

भारत में सूचना प्रौद्योगिकी का इतिहास स्वतंत्रता के बाद के दशक से प्रारंभ होता है, लेकिन वास्तविक प्रगति 1990 के दशक में उदारीकरण की नीति के बाद देखने को मिली। इंटरनेट, कंप्यूटर, मोबाइल फोन और अन्य डिजिटल साधनों के प्रसार ने भारत को वैश्विक मंच पर एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया। विशेषकर 21वीं सदी में भारत को "आईटी महाशक्ति" (IT Superpower) के रूप में पहचान मिली है। बैंगलोर, हैदराबाद, पुणे जैसे शहर सूचना प्रौद्योगिकी के हब बन गए हैं, जहाँ से दुनिया भर की कंपनियों को सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं।

"ज्ञान ही शक्ति है।" — यह कहावत सूचना प्रौद्योगिकी के युग में पूर्णतः सत्य सिद्ध होती है, क्योंकि आज ज्ञान और सूचना तक त्वरित पहुँच ही विकास का सबसे बड़ा आधार बन चुकी है।

सूचना प्रौद्योगिकी ने देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इससे रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं। लाखों युवाओं को सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट, डेटा एनालिसिस, क्लाउड कंप्यूटिंग, साइबर सिक्योरिटी और डिजिटल मार्केटिंग जैसे क्षेत्रों में रोजगार मिला है। "स्टार्टअप इंडिया" और "डिजिटल इंडिया" जैसी सरकारी पहल ने भी सूचना प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देकर उद्यमिता को प्रोत्साहित किया है। आज भारत में हजारों स्टार्टअप्स तकनीक के माध्यम से न केवल स्थानीय समस्याओं का समाधान कर रहे हैं, बल्कि वैश्विक बाजारों में भी प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी सूचना प्रौद्योगिकी ने क्रांतिकारी बदलाव किए हैं। ऑनलाइन शिक्षा, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, डिजिटल लाइब्रेरी और वर्चुअल क्लासरूम जैसी सुविधाओं ने ज्ञान की पहुँच को सुलभ और व्यापक बनाया है। ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चे भी अब उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक पहुँच प्राप्त कर रहे हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा ने शिक्षा प्रणाली को गतिशील बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसी प्रकार, स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में भी टेलीमेडिसिन, ई-हेल्थ रिकॉर्ड और स्वास्थ्य ऐप्स ने चिकित्सा सेवाओं को सुगम और सुलभ बना दिया है।

सरकारी सेवाओं में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने में भी सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। आज अधिकांश सरकारी सेवाएँ डिजिटल माध्यम से उपलब्ध हैं। आधार कार्ड, डिजिलॉकर, भीम एप, उमंग एप जैसी पहल ने आम जनता को

© www.examdhara.com

खंड-2: मूर्त निबंध

13. राजनीतिक इच्छाशक्ति और देश की सुरक्षा (70वीं BPSC)

किसी भी राष्ट्र की स्थिरता, प्रगति और समृद्धि का मूल आधार उसकी सुरक्षा व्यवस्था होती है। सुरक्षा केवल सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं होती, बल्कि आंतरिक शांति, आर्थिक मजबूती, तकनीकी विकास, सामाजिक सौहार्द और सांस्कृतिक अखंडता का भी समावेश करती है। इन सभी पहलुओं को सशक्त और सुरक्षित रखने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति का होना अत्यंत आवश्यक है। राजनीतिक इच्छाशक्ति वह मानसिक दृढ़ता और साहस है, जो नेतृत्व को कठिन से कठिन निर्णय लेने के लिए प्रेरित करती है, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों।

राजनीतिक इच्छाशक्ति का अर्थ है– देशहित में बिना किसी दबाव या निजी स्वार्थ के निर्णायक कदम उठाना। जब नेतृत्व में यह गुण होता है, तभी राष्ट्र कठिन चुनौतियों का सामना कर पाता है और सुरक्षा के क्षेत्र में ठोस उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकता है। यदि राजनीतिक नेतृत्व संकोच या असमंजस में रहता है, तो सुरक्षा तंत्र भी कमजोर पड़ता है और राष्ट्र विविध आंतरिक एवं बाह्य खतरों का शिकार बन सकता है।

देश की सुरक्षा बहुआयामी होती है। बाहरी सुरक्षा के लिए सैनिक बल, रक्षा तकनीक और कूटनीति की आवश्यकता होती है, जबकि आंतरिक सुरक्षा के लिए कानून व्यवस्था, सामाजिक एकता, भ्रष्टाचार नियंत्रण और आर्थिक मजबूती जरूरी है। इन सभी मोर्चों पर सफलता तभी संभव है जब राजनीतिक नेतृत्व दृढ़ निश्चयी हो। उदाहरण के लिए, जब देश पर आतंकवाद, अलगाववाद या विदेशी आक्रमण का संकट आता है, तब केवल सैनिक ताकत पर्याप्त नहीं होती, बल्कि त्वरित और प्रभावशाली राजनीतिक निर्णय भी आवश्यक होते हैं।

भारत के इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जहाँ राजनीतिक इच्छाशक्ति ने देश की सुरक्षा को नई दिशा दी। 1971 के भारत-पाक युद्ध के समय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने जिस तरह की निर्णायक भूमिका निभाई, वह आज भी राजनीतिक इच्छाशक्ति का उदाहरण मानी जाती है। बांग्लादेश के निर्माण में उनकी सक्रियता और साहस ने भारत की सुरक्षा स्थिति को भी मजबूत किया। इसी प्रकार, कारगिल युद्ध के समय तत्कालीन नेतृत्व ने सेना को पूर्ण स्वतंत्रता और समर्थन प्रदान किया, जिससे भारत ने विजय प्राप्त की।

आधुनिक समय में भी जब साइबर हमले, अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद, जैविक युद्ध जैसे नए खतरे सामने आ रहे हैं, तब राजनीतिक इच्छाशक्ति और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। अब युद्ध का स्वरूप बदल गया है। सीमाओं पर टैंक और तोप के मुकाबले डिजिटल नेटवर्क, वित्तीय तंत्र और सूचनाओं की लड़ाई अधिक घातक सिद्ध हो रही है। इन खतरों से निपटने के लिए ठोस रणनीति, तत्पर निर्णय और दृढ़ इच्छाशक्ति की अत्यधिक आवश्यकता है। यदि राजनीतिक नेतृत्व समय पर आवश्यक कदम उठाए, तो इन खतरों को प्रभावी ढंग से निष्फल किया जा सकता है।

राजनीतिक इच्छाशक्ति का प्रभाव केवल रक्षा नीतियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि रक्षा उत्पादन, अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने में भी नजर आता है। 'मेक इन इंडिया' जैसी पहल और स्वदेशी रक्षा उपकरणों के निर्माण में तेजी लाने के निर्णय, राजनीतिक इच्छाशक्ति के उदाहरण हैं। यदि कोई राष्ट्र अपनी रक्षा सामग्री के लिए पूरी तरह विदेशी स्रोतों पर निर्भर रहता है, तो उसकी सुरक्षा सदैव खतरे में रहती है। आत्मनिर्भरता के लिए मजबूत राजनीतिक संकल्प की आवश्यकता होती है।

इसके साथ ही आंतरिक सुरक्षा के क्षेत्र में भी राजनीतिक इच्छाशक्ति अत्यंत आवश्यक है। आतंकवाद, नक्सलवाद, सांप्रदायिकता, और भ्रष्टाचार जैसे आंतरिक संकटों से निपटने के लिए कठोर निर्णय लेने पड़ते हैं। यदि नेतृत्व कमजोर होगा या किसी दबाव में आकर निर्णय लेगा, तो देश की आंतरिक स्थिति अस्थिर हो सकती है।

साथ ही, जनता का विश्वास भी तभी बना रहता है जब नेतृत्व में दृढ़ता और पारदर्शिता होती है। राजनीतिक इच्छाशक्ति का एक पहलू यह भी है कि वह निर्णय लेने में जनता के हित को सर्वोपरि रखे, न कि केवल तात्कालिक लोकप्रियता को। जब जनता यह महसूस करती है कि उसके नेता राष्ट्रीय सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रहे हैं, तो वह स्वयं भी राष्ट्रहित में योगदान करने को प्रेरित होती है।

महात्मा गांधी ने कहा था–

"You may never know what results come from your actions. But if you do nothing, there will be no result."

(तुम्हें यह कभी पता नहीं चलेगा कि तुम्हारे कार्यों का क्या परिणाम निकलेगा, लेकिन यदि तुम कुछ नहीं करोगे तो कोई परिणाम नहीं निकलेगा।)

यह कथन राजनीतिक इच्छाशक्ति के महत्व को प्रतिपादित करता है। कोई भी पहल तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक नेतृत्व में साहसिक कदम उठाने की दृढ़ता न हो।

वैश्विक परिदृश्य में भी हम देखते हैं कि जिन देशों का नेतृत्व दृढ़ इच्छाशक्ति रखता है, वे वैश्विक शक्तियों के बीच अपना सम्मानजनक स्थान बना पाते हैं। अमेरिका, रूस, चीन जैसे देशों ने समय-समय पर अपनी राजनीतिक इच्छाशक्ति का परिचय देकर अपनी सुरक्षा और प्रभुता को कायम रखा है। भारत भी अब इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है, और उसका कद वैश्विक मंच पर निरंतर बढ़ रहा है।

अंततः, यह निष्कर्ष निकलता है कि देश की सुरक्षा केवल रक्षा बलों की ताकत पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह राजनीतिक नेतृत्व की इच्छाशक्ति पर भी उतनी ही निर्भर है। दृढ़ संकल्प, स्पष्ट दृष्टि, साहसिक निर्णय और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने वाली राजनीतिक इच्छाशक्ति ही देश को भीतर और बाहर से सुरक्षित कर सकती है। इसीलिए, समय की मांग है कि हमारे राजनीतिक नेतृत्व में यह गुण सदैव बना रहे, ताकि भारत एक सशक्त, सुरक्षित और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर अपना स्थान और मजबूत कर सके।

14. भ्रष्टाचार का अन्त और देश का उत्थान (70वीं BPSC)

भ्रष्टाचार एक ऐसी समस्या है जो किसी भी देश की प्रगति, समृद्धि और सामाजिक न्याय की राह में सबसे बड़ी बाधा बनकर खड़ी रहती है। यह समाज के हर वर्ग को प्रभावित करता है और लोकतंत्र की नींव को कमजोर करता है। भ्रष्टाचार का न केवल आर्थिक, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्तर पर भी घातक प्रभाव पड़ता है। इस समस्या का समाधान करना, राष्ट्र की प्रगति और विकास के लिए आवश्यक है। अगर हम भ्रष्टाचार का अन्त करना चाहते हैं तो हमें इसकी जड़ तक पहुंचने और इस पर सख्त नियंत्रण लगाने की आवश्यकता है।

भ्रष्टाचार का प्रभाव न केवल सरकार की कार्यशैली पर पड़ता है, बल्कि यह जनता के जीवन स्तर को भी प्रभावित करता है। सरकारी योजनाओं में भ्रष्टाचार के कारण जिन योजनाओं का उद्देश्य समाज के पिछड़े वर्गों की मदद करना होता है, वे योजनाएं केवल अधिकारियों और नेताओं के हाथों में जाती हैं, और इसका लाभ आम जनता तक नहीं पहुँचता। इससे सरकारी धन का दुरुपयोग होता है और जनता का विश्वास सरकार पर से उठने लगता है। शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क निर्माण और अन्य विकास कार्यों में भ्रष्टाचार के कारण देश का विकास रुक जाता है।

आर्थिक दृष्टिकोण से देखें तो भ्रष्टाचार से देश की अर्थव्यवस्था कमजोर होती है। निवेशक और उद्योगपति उन देशों में निवेश करने से कतराते हैं, जहाँ भ्रष्टाचार उच्चतम स्तर पर होता है। इसके कारण आर्थिक संसाधनों का अत्यधिक अपव्यय होता है और देश का विकास प्रभावित होता है।

भ्रष्टाचार का सामाजिक असर भी गहरा होता है। यह समाज में असमानता और भेदभाव को बढ़ावा देता है। जो लोग ताकतवर होते हैं या जिनके पास धन है, वे आसानी से सरकारी कामकाज में अपनी सुविधा के अनुसार बदलाव करवा सकते हैं, जबकि साधारण नागरिकों को यह अवसर नहीं मिल पाता। इस प्रकार, समाज में धन और ताकत के आधार पर असमानताएँ उत्पन्न होती हैं, जो समाज में विरोधाभास और तनाव का कारण बनती हैं।

प्रसिद्ध कवि और चिंतक आचार्य चतुरसेन ने कहा था, "भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ा नहीं, तो यह समाज और राष्ट्र को धीरे-धीरे नष्ट कर देगा।" यह विचार इस बात को स्पष्ट करता है कि भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए एक संगठित और दृढ़ प्रयास आवश्यक है।

भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में हमें कई रणनीतियों को अपनाने की आवश्यकता है। सबसे पहले, हमें सरकारी तंत्र में पारदर्शिता लानी होगी। यह सुनिश्चित किया जाए कि सभी सरकारी कार्य और योजनाएँ पूरी पारदर्शिता से लागू हों। इसके लिए सूचना का अधिकार (RTI) जैसे कानूनी प्रावधानों को मजबूत किया जाना चाहिए ताकि नागरिक अपनी सरकार से सवाल पूछ सकें और जवाब प्राप्त कर सकें।

खंड-3: स्थानीय लोकोक्ति पर आधारित निबंध

25. बनले के साथी सब केहू ह अउरी बिगड़ले के केहु नाहीं (70वीं BPSC)

किसी गांव में एक साधु बाबा आए। उनके पास एक तोता था जो सुंदर और चंचल था। बाबा जहाँ भी जाते, वह तोता लोगों को आकर्षित कर लेता। धीरे-धीरे गाँव के बड़े-बड़े लोग बाबा के आस-पास मंडराने लगे। सब उन्हें खाने का न्योता देने लगे, वस्त्र भेंट करने लगे, आदर-सत्कार में जुट गए। साधु बाबा मुस्कुराते और आशीर्वाद देते। एक दिन अचानक वह तोता उड़ गया। अब साधु बाबा वही के वही थे, परन्तु उनके आस-पास का सारा सम्मान, आतिथ्य और भीड़ छूमंतर हो गई। बाबा ने मुस्कुराते हुए कहा, "जब तक चमक थी, सब साथ थे, अब असली मैं रह गया हूँ, तो कोई नहीं।"

यह कहानी हमारे समाज की कटु सच्चाई को उजागर करती है। जब तक व्यक्ति सफलता, पद-प्रतिष्ठा, संपत्ति या रूप के बल पर चमकता है, तब तक सब उसके साथ होते हैं। परन्तु जैसे ही परिस्थितियाँ बदलती हैं, सफलता का सूरज ढलता है, दुनिया का चेहरा भी बदल जाता है। इसी भावना को हमारे लोकजीवन में 'बनले के साथी सब केहू ह अउरी बिगड़ले के केहु नाहीं' कहावत में बड़ी सुंदरता से कहा गया है। यानी जब तक सब कुछ अच्छा चलता है, तब तक लोग साथ निभाते हैं, पर जब बुरा समय आता है, तो साथ छोड़ देते हैं।

मनुष्य स्वभाव से ही स्वार्थी होता है। वह उन्हीं के साथ रहना पसंद करता है जिनसे उसे कुछ लाभ या सुविधा प्राप्त होती है। जब किसी के पास वैभव, यश, या शक्ति होती है, तो लोग उसकी प्रशंसा करते हैं, उसके आगे-पीछे घूमते हैं। पर जब वही व्यक्ति संकट में पड़ता है, दरिद्र हो जाता है या अपना प्रभाव खो देता है, तब वही लोग उससे मुँह मोड़ लेते हैं। यह संसार का अटल सत्य है जिसे प्रत्येक व्यक्ति किसी-न-किसी मोड़ पर अनुभव करता है।

समाज में इसके अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं। कोई व्यापारी जब धनवान होता है, तो उसके घर मेहमानों का ताँता लगा रहता है। बड़े-बड़े लोग उससे दोस्ती करना चाहते हैं। परन्तु जब व्यापार में घाटा होता है, दिवाला निकलता है, तो वही लोग उसे पहचानने से भी इनकार कर देते हैं। फिल्मी दुनिया में भी अनेक कलाकारों के जीवन में यह देखा गया है। जब वे लोकप्रिय रहते हैं, तो चारों ओर चमक-दमक रहती है। लेकिन जैसे ही उनकी प्रसिद्धि का सूर्य अस्त होता है, वे अकेले पड़ जाते हैं।

महापुरुषों ने भी इस सत्य को पहचाना और इसकी ओर संकेत किया है। तुलसीदास जी ने लिखा है—

"सज कुलिन गुन ग्यान रतन धनु, जो नाहिं दरिद्र के मीत।"

अर्थात सज्जन, कुलीन, गुणी, विद्वान और धनी लोग भी दरिद्र व्यक्ति के मित्र नहीं बनते। यह कटु सच्चाई है कि दुनिया सफलता की पूजा करती है और विफलता से मुँह मोड़ लेती है।

मनुष्य का स्वभाव अवसरवादी हो गया है। वह उसी समय साथ देता है जब उसे अपनी भलाई दिखती है। जब संकट आता है, तब वह किनारा कर लेता है। मित्रता, संबंध और प्रेम सब आजकल स्वार्थ की बुनियाद पर टिके हुए दिखाई देते हैं। रिश्ते भी तब तक निभाए जाते हैं जब तक उनमें लाभ की उम्मीद होती है। जैसे ही कोई आर्थिक, सामाजिक या व्यक्तिगत संकट आता है, लोग दूर हो जाते हैं।

"बनले के साथी सब केहू ह" का अर्थ है कि जब सब कुछ अच्छा चलता है, तब लोग अपनेपन का दिखावा करते हैं। वे मिठास भरी बातें करते हैं, साथ चलते हैं, मदद करते हैं। परन्तु "बिगड़ले के केहु नाहीं" का तात्पर्य है कि जब हालत बिगड़ जाती है, दुख-दर्द आता है, तो वही लोग मुंह फेर लेते हैं।

कभी-कभी यह अनुभव भी जीवन का बड़ा शिक्षक बन जाता है। जब सब कुछ छिन जाता है, तब व्यक्ति असली और नकली संबंधों की पहचान कर पाता है। कठिनाइयाँ रिश्तों की असली परीक्षा होती हैं। जो लोग दुःख के समय साथ निभाते हैं, वही सच्चे साथी कहलाते हैं। कहा भी गया है—

"सच्चा मित्र वही है जो दुःख में साथ दे।"

रामचरितमानस में भगवान श्रीराम भी वनवास के समय यही अनुभव करते हैं। अयोध्या में रहते समय जिन राजाओं और दरबारियों की भीड़ रहती थी, वे सब एकाएक गायब हो जाते हैं। केवल कुछ गिने-चुने लोग जैसे भरत, लक्ष्मण, शबरी, और निषादराज जैसे भक्तजन ही उनके सच्चे साथी बनते हैं।

इसी प्रकार महाभारत में भी जब पांडवों पर कठिनाइयाँ आती हैं, तो अधिकतर राजाओं ने उनका साथ छोड़ दिया था। लेकिन भगवान श्रीकृष्ण जैसे मित्र ने हर संकट में उनका साथ निभाया। यह सिद्ध करता है कि संकट के समय जो साथ देता है, वही वास्तव में मित्र कहलाने योग्य होता है।

आज के समय में भी यह कहावत पूरी तरह से लागू होती है। व्यावसायिक जीवन में, राजनीति में, सामाजिक जीवन में — हर जगह स्वार्थ की प्रधानता दिखाई देती है। जो ऊँचे पदों पर हैं, जो संपन्न हैं, उनके आसपास लोगों की भीड़ रहती है। जैसे ही वह पद जाता है या संपत्ति घटती है, वही भीड़ छंट जाती है।

इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति को चाहिए कि वह बनते समय भी अपने व्यवहार में विनम्रता बनाए रखे और बिगड़ते समय धैर्य और साहस से काम ले। उसे चाहिए कि वह सच्चे मित्रों की पहचान करे और उन्हीं पर भरोसा करे।

जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। हर सफलता स्थायी नहीं होती, और हर असफलता अंतिम नहीं होती। इसलिए न तो सफलता के समय घमंड करना चाहिए, न असफलता के समय निराश होना चाहिए।

अंततः यही कहा जा सकता है कि 'बनले के साथी सब केहू ह अउरी बिगड़ले के केहु नाहीं' — इस कहावत में जीवन का गहरा सत्य छिपा है। जो इसे समय रहते समझ लेता है, वही जीवन में सच्चे संबंधों की परख कर पाता है और एक संतुलित जीवन जीता है।

26. जिअते माछी नाहीं घोंटाई (70वीं BPSC)

"जिअते माछी नाहीं घोंटाई" एक प्रसिद्ध लोकप्रचलित कहावत है, जो हमारे जीवन के एक अत्यंत गहरे सत्य को उजागर करती है। इस कहावत का अर्थ है कि जब कोई गलती या अन्याय हमारे सामने होता है, तो उसे अनदेखा करना बहुत कठिन हो जाता है। जैसे एक जीवित मछली को मारना कठिन होता है क्योंकि वह फड़फड़ाती रहती है, वैसे ही जब किसी घटना का साक्षी स्वयं व्यक्ति होता है, तो उसमें निष्क्रिय बने रहना स्वभाव के विरुद्ध होता है। यह कहावत हमारे स्वाभाविक मानवीय व्यवहार और नैतिक चेतना दोनों को दर्शाती है।

मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा है कि वह सामने हो रही किसी गलती, अन्याय या अनुचित कार्य को देखकर चुप नहीं रह सकता। जब हम किसी को गलती करते देखते हैं, चाहे वह परिवार में हो, मित्रों के बीच हो या कार्यस्थल पर, तो स्वाभाविक रूप से हमारे भीतर उसे सुधारने या विरोध करने की भावना जागृत होती है। यदि कोई माता-पिता अपने बच्चों को गलत रास्ते पर चलते देखें तो वे उन्हें तुरंत टोकते हैं। यदि कोई शिक्षक छात्र को अनुचित कार्य करते देखे तो वह उसे सही रास्ता दिखाने का प्रयास करता है। यह मनुष्य की नैतिक जिम्मेदारी का हिस्सा है कि वह अपने सामने घटने वाले अन्याय या त्रुटियों के प्रति सजग रहे और यथासंभव उसे सुधारने का प्रयास करे।

यह कहावत हमारे निजी जीवन में भी कई बार चरितार्थ होती है। परिवार के भीतर यदि कोई सदस्य अनुचित व्यवहार करे या सामाजिक नियमों का उल्लंघन करे, तो उसे अनदेखा करना आसान नहीं होता। चाहे वह छोटा बच्चा हो या कोई वरिष्ठ सदस्य, यदि हम उसकी गलती को अनदेखा कर दें, तो धीरे-धीरे वह गलती बड़ी समस्या बन सकती है। इसलिए सही समय पर हस्तक्षेप करना, मार्गदर्शन देना और आवश्यक सुधार करना एक आवश्यक दायित्व बन जाता है। इसी प्रकार मित्रों के साथ भी जब हम गलत व्यवहार देखते हैं, तो एक सच्चे मित्र का कर्तव्य बनता है कि वह समय रहते सलाह दे, न कि चुप्पी साध ले।

कार्यक्षेत्र में भी "जिअते माछी नाहीं घोंटाई" का सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक है। एक अच्छा नेतृत्वकर्ता वही होता है जो सामने हो रही त्रुटियों को समय रहते पहचानकर उनका समाधान करे। यदि कार्यस्थल पर किसी कर्मचारी द्वारा की जा रही गलतियों को नजरअंदाज कर दिया जाए, तो इससे न केवल कार्यक्षमता प्रभावित होती है, बल्कि पूरी संस्था के वातावरण पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। इसीलिए प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण कार्य यह भी है कि वह सामने हो रही समस्याओं का समाधान तत्परता से करे। यदि सामने की मछली को अनदेखा किया जाए, तो वह पूरे तालाब को गंदा कर सकती है।

About Examdhara

Welcome to Examdhara, Bihar's leading online platform for state-level exam preparation. We provide free, accurate, and up-to-date resources for aspirants preparing for BPSC, BSSC, Bihar SI, Bihar Constable, Bihar School Exams, and Bihar University Exams, including study materials, previous year papers, quizzes, and mock tests. Our mission is to make preparation easy, structured, and effective, helping students understand exam trends, track their progress, and build confidence. At Examdhara, we are more than a study resource—we are your preparation partner, committed to empowering every aspirant to achieve success in Bihar state exams.

Coming Soon.....

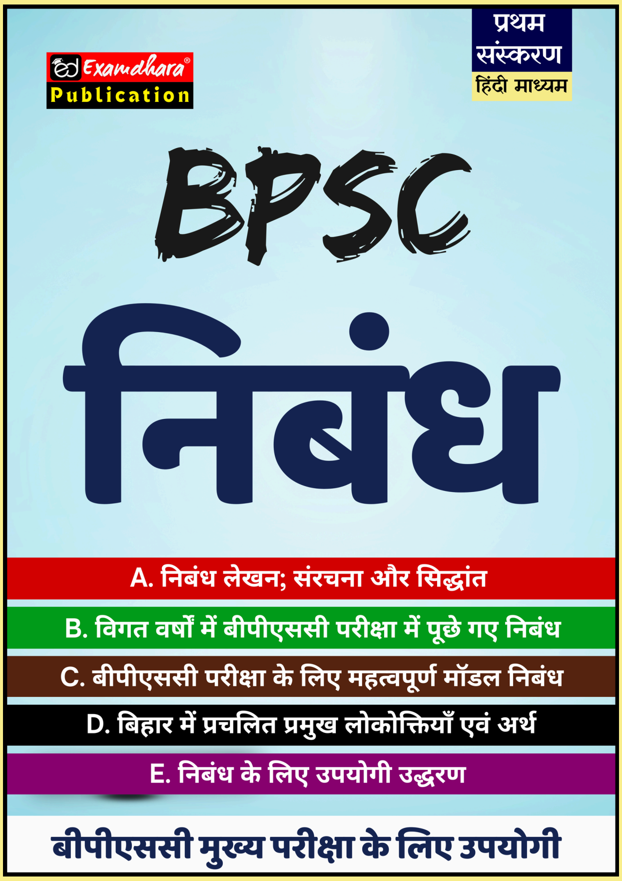

Also Available on amazon Flipkart Bookscape

For Distributorship Contact at

Examdhara® Publication

www.examdhara.com

info@examdhara.com

89-696867-62

Price- 149/-